खंड—२ संख्या—६

बिहार विधान-सभा वादवृत्त

(भाग—२ कार्यवाही—प्रश्नोत्तर रहित)

बृहस्पतिवार, तिथि १ दिसम्बर, १९७७

विषय-सूची

		पृष्ठ
शून्य काल में चर्चाएँ :		
(क) मुहर्रम के अवसर पर चीनी का आवंटन ।	....	२
(ख) फसलों की लूट-पाट	....	२
(ग) कोयले का लाइसेन्स	....	२-३
(घ) नेत्रहीन लोगों का धरना	....	३
(ङ) पाठ्य-पुस्तकों की कठिनाई	....	३
(च) परवत्ता प्रखण्ड में गंगा का कटाव	....	४
(छ) धरहरा थाना में अशांति	....	४
(ज) रोहतास जिले में उर्वरक की कमी	....	४
(झ) अन्तर्जातीय विवाह के लिए आर्थिक सहायता	....	४-५
(ञ) परीक्षा में अशांति	....	५
(ट) ग्रामीण सड़कों का निर्माण	....	५
(ठ) आवागमन की कठिनाई	....	५
(ड) मिथिला विश्वविद्यालय में अशांति	....	६
(ढ) लोक-निर्माण मंत्री के ऊपर आरोप	....	६
(ण) बैंक की नियुक्ति में अंग्रेजी की प्रधानता	....	६-७
(त) भूतपूर्व मुख्य मंत्री पर आरोप	....	७—९
अत्यावश्यक लोक महत्व के विषय पर ध्यानाकर्षण :		
नैनीजोर गाँव में अशांति	....	९

(ड) मिथिला विश्वविद्यालय में आशांति

* **श्री मुनीश्वर प्रसाद सिंह** :— मैं सरकार का ध्यान मिथिला विश्वविद्यालय की ओर खींचना चाहता हूँ। मिथिला विश्वविद्यालय के पांच बड़े प्रोफेसर सर्वश्री वाचस्पति ठाकुर, रमाकान्त पाठक, रविन्द्र कुमार चौधरी, मदन मोहन प्रसाद सिंह और उग्रनाथ झा उपकुलपति से बातचीत करने के लिये गये थे। उपकुलपति जो हैं वह बहुत ईमानदार हैं इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन उन्होंने बातचीत के सिलसिले में उन प्रोफेसरों को बहुत बुरा-भला कहा। इसपर उन प्रोफेसरों ने इसका प्रतिवाद किया। अब सुनने में आया है कि उनलोगों के ससपेंशन का आदेश जारी किया गया है। इस प्रकार की स्थिति से मिथिला विश्वविद्यालय का वातावरण बहुत गर्म है। अतः मैं सरकार का ध्यान आकृष्ट करता हूँ।

(ढ) लोक निर्माण मंत्री के ऊपर आरोप

* **श्री विक्रम कुँअर** :—अध्यक्ष महोदय, एक पम्फलेट मुख्य मंत्री के नाम छपा है जो अभी भी गेट पर बँट रहा है। उस पम्फलेट में लोक निर्माण मंत्री के ऊपर आरोप लगाया गया है। मैं उस ओर आपके माध्यम से सदन का ध्यान खींचना चाहता हूँ।

श्री बैद्यनाथ मेहता :—अध्यक्ष महोदय, इस तरह का पम्फलेट बटेगा और विधान-सभा का उस पर अटेनशन ड्रा किया जायगा, यह तो ठीक नहीं है।

(ण) बैंक की नियुक्ति में अंग्रेजी की प्राथमिकता

श्री शिवपूजन सिंह :—अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से सरकार का ध्यान मैं स्टेट बैंक औफ इंडिया, पटना शाखा की अंग्रेजी-परस्त नीति की ओर खींचना चाहता हूँ। श्री अमरेश कुमार सिंह, डालमियानगर (रोहतास) जो बी० एस-सी० उत्तीर्ण नौजवान हैं, लिपिक सह-खजांची के पद पर नियुक्ति हेतु स्टेट बैंक औफ इंडिया, पटना शाखा में लिखित एवं साक्षात्कार परीक्षा दी। उनकी नियुक्ति भी हो गयी परन्तु जब वे ज्वाएन करने के लिये गये तो उन्हें यह कहकर जोआइन करने नहीं दिया गया कि वे मैट्रिक की परीक्षा में अंग्रेजी में पास नहीं हैं। १९६७ की संविद सरकार ने जिसमें कर्पूरी ठाकुर जी एक मंत्री थे, मैट्रिक की परीक्षा से अंग्रेजी को समाप्त कर दिया था। आज फिर वे ही गद्दी पर हैं। अंग्रेजी के चलते आज नौजवानों का कत्ल हो रहा है। अतः मैं अनुरोध करता हूँ कि स्टेट बैंक औफ इंडिया से सरकार पूछताछ करे ताकि नौजवान लोगों को परेशानी नहीं हो।